भारत सरकार के टी. बी. प्रोग्राम (डॉट्स) का

चक्रव्यूह

निहाल सिंह के 5 टी.बी. आई.डी. कार्ड।

जिसने पिछले 7 साल में 6 बार टी. बी. का सरकारी ईलाज (डॉट्स) लिया।

जिसके तहत सप्ताह मे दवा की केवल 3 खुराकें दी जाती है।

Concept, Complied, Edited & Published on 1July, 2016 by
डा. रमन कक्कड़, जिला तपेदिक केंद्र, RNTCP
सिविल अस्पताल फरीदाबाद हरियाणा (भारत)

© All rights are reserved with the editor cum publisher. No portion of this book may be copied, reproduced or translated without the written permission of the above.

www.tbfreeworld.org

यह पुस्तक 1जुलाई 2016 को प्रकाशित की गई जो कि सोभाग्यवश रमेश चन्द टी.बी.एच.वी. का जन्मदिवस था

टी. बी. का सरकारी ईलाज–डॉट्स; उत्तम इलाज, या छलावा?

निहाल सिंह सुपुत्र श्री दीपचन्द
गांव लोहेना, तह. होडल
जिला पलवल, हरियाणा ।

6 बार सरकारी इलाज

टी.बी. नं. 178/2009,
11/2010, 119/2011,
383/2012,628/2013
254/2015

"डा0 साहब, या तो मुझे ठीक कर दो या फिर साफ–साफ जवाब दे दो कि आपके बस से बाहर है। "रूंधे हुए गले से ऊँची आवाज में दी गई इस चेतावनी को सुनकर मैं सन्न रह गया। ओ.पी.डी. में उपस्थित सब मरीज तथा टी.बी. का स्टाफ भी स्तब्ध रह गया । एक दम सन्नाटा सा छा गया। सबकी निगाहें निहाल की ओर मुड गई।

निहाल सिंह एक गरीब मजदूर है। बेलदारी करके जैसे तैसे अपनी बीवी, चार बेटे तथा एक बेटी का भरण पोषण कर रहा है।

जून 2009 में उसके संतुष्ट व सुखी जीवन में काले बादल छा गए । उसे टी.बी. हो गई और होडल सरकारी अस्पताल से 'सप्ताह मे दवा की 3 खुराक वाला' डॉट्स का इलाज चल पड़ा । लेकिन इलाज पूरा होते ही दोबारा बीमार पड़ा और फिर से दूसरी श्रेणी का डॉट्स का इलाज चल पड़ा। बस, कुछ महीने तबीयत ठीक रही पर फिर टी.बी का तीसरा अटैक 2011 में आ गया । टी.बी. की दवा तो उसके रोजमर्रा के जीवन का एक अभिन्न अंग बन गई । मानो रोटी के साथ हर बार चटनी खाना।

यही नही, आने वाले वर्षो में भी टी.बी. बार–बार उभर कर आती रही। बस एक के बाद एक सरकारी इलाज चलते चले गए। कुल छः बार डॉट्स का कोर्स चला। क्रमशः टी.बी. नं0 178/2009, 11/2010, 119/2011, 383/2012, 628/2013 और आज 254/2015।

निहाल की बलगम की कुछेक खराब रिपोर्टें :

दिनांक	लैब का नाम	लैब नं0.	परिणाम
26.6.09	होडल स्वास्थय केन्द्र	453	+ POSITIVE
20.2.10	होडल स्वास्थय केन्द्र	87	+ POSITIVE
25.3.11	होडल स्वास्थय केन्द्र	310	+ POSITIVE
17.9.11	होडल स्वास्थय केन्द्र	979	3+ POSITIVE
30.6.12	महरौली टी.बी. हस्पताल दिल्ली	16	1+ POSITIVE
27.9.13	होडल स्वास्थय केन्द्र	1154	+ POSITIVE
24.6.14	महरौली टी.बी. हस्पताल दिल्ली	229	2+ POSITIVE
6.11.15	होडल स्वास्थय केन्द्र	1219	1+ POSITIVE

हालांकि इस दौरान 2–3 बार आई.आर.एल. करनाल व महरौली टी. बी. अस्पताल दिल्ली से कल्चर टैस्ट (जैसे एल.पी.ए. नं0 2086 / 24.06.2014) करवाने पर उसे खतरनाक एम.डी.आर. (लाइलाज) बीमारी नहीं पाई गई। लेकिन उसकी बलगम के कीटाणु तो साफ होने का नाम ही नहीं लेते ।

हर बार बस नया कार्ड बन जाता । लगातार चल रहे इलाज ने उसके शरीर को कमजोर व खोखला कर डाला है। गरीबी और मजबूरी के चलते बच्चों को पढ़ाई छोड़ मजदूरी करने पर मजबूर होना पड़ा। जिन दो बड़े बेटों की शादी हो चुकी है, वे अपने में मस्त हैं।

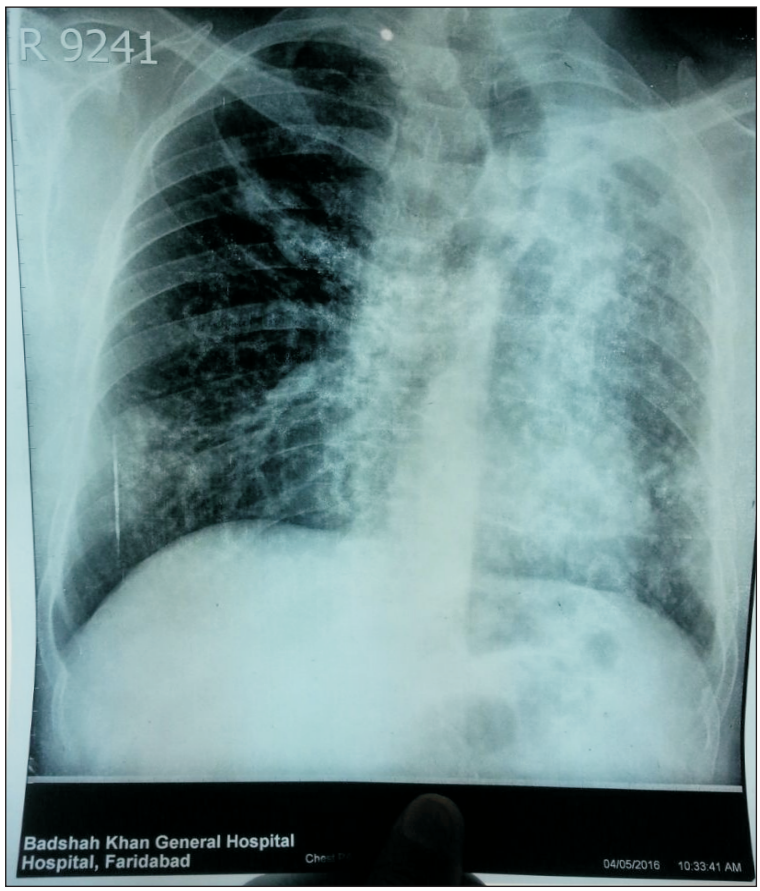

बीमारी, गरीबी और दवाईयों के दुष्परिणामों से निहाल बिल्कुल ही टूट चुका है।

उस दिन उसका छठा इलाज शुरू करते हुए मैं सोच रहा था कि आखिर निहाल की क्या गलती है। पिछले 7 वर्षो में वह तो पूरे विश्वास के साथ सरकारी अस्पतालों में आता–जाता रहा है। उसे डॉट्स पर पूरा भरोसा था।

लेकिन क्या 'सप्ताह मे दवा की 3 खुराक वाला' सरकारी

डॉट्स एक उत्तम इलाज है ?

या एक छलावा ?

या एक विश्वासघात ?

डॉ. रमन कक्कड़
www.tbfreeworld.org

आर्थिक मदद देने के लिए कृप्या आप स्वयं मरीज से सीधा सम्पर्क करें: (पी.पी0 नं0)
09671504402, 08398967503, 09812652103

सात फेरे

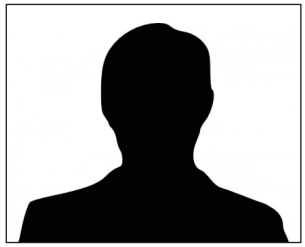

विजय सुपुत्र श्री शेर सिंह
गांव मानपुर, नांगल जाट,
हथीन, पलवल, हरियाणा

6 बार सरकारी इलाज

टी.बी. नं. (यू.आई.डी. नं.)
360/2007, 89/2008,
470/2009, 45/2010,
454/2011, 296/2012,
PMDT नं0 68/2013,
XDR नं0 ?, मृत्यु
11–01–2015

2007 की वह सुबह मुझे आज भी अच्छी तरह से याद है जब विजय पहली बार अपनी स्पूटम पोजिटिव रिपोर्ट लेकर मेरे पास आया था। टी.बी. का नाम सुनते ही वह डर के मारे थर–थर कांप रहा था। 'जी मैं बचूंगा या मरूंगा'? उसने पूछा था। मैने पूरे विश्वास से उसे समझाया था ''तुम सही समय पर सही जगह आ पहुंचें हो। सरकारी इलाज से तुम जरूर ठीक हो जाओगे। भारत सरकार ने डॉट्स का प्रोग्राम तुम्हारे जैसे गरीब लोगों के लिए ही देश भर में चला रखा है। यह अति उत्तम इलाज है।''

हुआ भी कुछ ऐसा ही । पहली श्रेणी के छः महीने के इलाज से विजय बिल्कुल स्वस्थ हो गया तथा फिर से जुट गया अपने बूढ़े माता–पिता, पत्नी तथा तीन बच्चों के भरण पोषण में । चूंकि वह अकेला कमाने वाला था। था तो अनपढ़ लेकिन इलैक्ट्रीशियन का काम जानता था । अगले साल उसे फिर से टी.बी. की बीमारी बन गई तथा उसने फिर दूसरी श्रेणी का डॉट्स का इलाज 8 महीने तक लिया तथा ठीक हो गया। हम दोनों ने चैन की सांस ली ।

लेकिन ये खुशी ज्यादा दिन ना टिक पाई। विजय 2009 में तीसरी बार बीमार पड़ा। इतना ही नहीं, इसके बाद फिर 2010, 2011 तथा 2012 में भी टी.बी. से पीड़ित होता चला गया । हमारे डॉट्स के प्रोग्राम में 6 बार पंजीकृत हुआ । हर बार उस का दवा का डिब्बा मैने खुद चलवाया था।

हताश हो मैने दूरभाष से डॉ0 रमन कक्कड़ से इस मरीज की चर्चा की। उन्होने कल्चर टैस्ट करवाने की सलाह दी । इसके बाद वह 2–3 बार पी.

जी.आई. हस्पताल रोहतक तथा 1–2 बार दिल्ली के महरौली टी.बी. हस्पताल में भर्ती रह कर आया।

जाँचों मे पाया गया कि अब उसकी टी.बी. और ज्यादा विकृत हो चुकी थी जिसे खतरनाक एम.डी.आर. (मल्टी ड्रग रेजिस्टैन्ट) टी.बी. कहते हैं। श्रीमती विमलेश डी.पी.एस. ने उसे चौथी श्रेणी का इलाज (पी.एम.डी.टी. नं0 68/2013) दिया। यह टी. बी. प्रोग्राम में उसका सातवां फेरा था।

लेकिन सब बेकार। बाद में सुनने में आया कि उसकी बीमारी एक कदम और आगे बढ़ गई है – जिसे एक्स.डी.आर (XDR) कहा जाता है।

आखिरकार 11 जनवरी 2015 को विजय चल बसा।

एक सवाल मुझे दिन रात परेशान करता रहता है । उसकी मौत का असली कारण क्या था ? टी.बी. का कीटाणु?

उसकी गरीबी ?

या भारत सरकार का 'सप्ताह मे दवा की 3 खुराक वाला' डॉट्स का ईलाज?

लेखक :– दीपचन्द भारद्वाज
लैब टैक्नीशियन
जिला सरकारी हस्पताल, पलवल

आर्थिक मदद देने के लिए कृप्या आप स्वयं मरीज के परिवार से सीधा सम्पर्क करें:

.....

दवा के दस डिब्बे

रेखा रानी
टी0.बी0. हेल्थ विजिटर,
डाट्स सेन्टर, जच्चा–बच्चा अस्पताल,
सैक्टर–30, फरीदाबाद

14 साल की प्यारी सी एक लड़की मेरे पास आई और बोली ''दीदी ये लो मेरा कार्ड''। कार्ड पड़कर मुझे झटका लगा। उसे टी0 बी0 थी। बड़े भारी मन से मैने डॉट्स का एक नया डिब्बा निकाला, उसकी सील फाड़ी ओर उस पर लिख दिया ''प्रिया (बदला हुआ नाम)''। इस डिब्बे में 6 महीने की पूरी दवाईयां मौजूद थी। उसने लगकर 6 महीने इलाज किया (टी बी न. 795/06) और वो ठीक हो गई।

कुछ महीनों बाद वो फिर बीमार पड़ गई और उसे दोबारा टी बी न. 827/07 के तहत दूसरा डिब्बा खाना पड़ा।

डा0 सहाब ने बताया कि खाने पीने की कमी से जो लोग कुपोषित होते हैं या जिन्हे शूगर (मधुमह, डायविटीज) या एच आई वी एड्स या नशे की लत हो उन्हें टी बी होती भी जल्दी है तथा पूरे इलाज के बाद शायद दोबारा रिलैप्स भी होने का खतरा ज्यादा होता है।

कुछ महीनों बाद प्रिया के पापा दीवान (बदला हुआ नाम) भी टी बी के शिकार हुए (टी बी न0 1058/07)।

डा0 सहाब ने बताया अगर मरीज की बलगम में टी बी के कीटाणु निकल रहे हो और वो सावधानी न बरते तो परिवार के दूसरे सदस्यों को सक्रमण हो जाता है। जीवन में पहली बार टी बी की सावधानियों का महत्व मेरी समझ में आया। उस दिन से मैंने हर नये टी बी के मरीज को सावधानियां बार–बार सुनाना व समझाना शुरू कर दिया।

बहुत दुख की बात है कि प्रिया को तीसरा डिब्बा टी बी न. 380/08 और फिर थोड़ा रूक कर चौथा डिब्बा टी बी न. 150/09 भी खाना पड़ा।

सुना है भगवान जब देता है, छप्पर फाडकर देता है। उस परिवार के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। उसके पापा को दूसरी बार टी बी न. 979/09 और फिर तीसरी बार टी बी न. 47/11 के तहत इलाज लेना पड़ा।

इतना ही नहीं प्रिया के दोनो बड़े भाई राजेश टी बी न. 816/09, 88/15 दूसरा डॉटस और ब्रिजेश टी बी नं. 1034/09 भी इस रोग से न बच पाऐ।

कुछ दिनों बाद आखिरी विकेट भी गिरा। छोटी बहन पूनम (बदला हुआ नाम) भी रोग ग्रस्त हो गई टी बी न. 1052/11।

सबने अपना इलाज पूरा कर लिया है। सारा परिवार मेरा तथा भारत सरकार का बहुत आभार व्यक्त करता है कि बार–बार उनको निशुल्क दवा मिलती रही।

प्रिया की बलगम की कुछेक खराब रिपोर्टें :–

क्र. सं.	दिनांक	लैब का नाम	लैब नं0	परिणाम
1.	3-7-07	एफ.आर.यू.–I	289	2+positive
2.	3-3-08	डी.टी.सी.	589	1+positive

प्रिया के पिता दीवान की बलगम की कुछेक खराब रिपोर्टें :–

क्र. सं.	दिनांक	लैब का नाम	लैब नं0	परिणाम
1.	31-8-07	एफ.आर.यू.–I	394	3+positive
2.	26-5-09	महरौली टी.बी. अस्पताल दिल्ली	1408	2+positive
3.	30-9-11	ई.एस.आई. हस्पताल सै08 फरीदाबाद	1071	2+positive

प्रिया
(टी.बी. का सरकारी ईलाज 4 बार)

दीवान
(टी.बी. का सरकारी ईलाज 3 बार)

राजेश

बृजेश
(टी.बी. का सरकारी ईलाज 2 बार)

पूनम

सम्पादक की टिप्पणी:

इलाज करने के बावजूद भी, इस तरह से, बार–बार टी.बी. उभरने पर दूसरों मे संक्रमण का खतरा भी बढ़ता जाता हैं। प्रिया स्वंय 4 बार डॉट्स के तहत पंजीकृत हुई। जबकि उसके पिता (दीवान सिंह) 3 बार। नतीजाः टी.बी. का किटाणु उनके घर–परिवार के पर्यावरण मे हर समय मडराता रहा। परिवार के सदस्यों का रह–रह कर किटाणुओं से सामना होता गया। नतीजा : करीब–करीब सारा परिवार ही टी.बी. की चपेट मे आ गया–दोनो भाई व बहन भी।

वही हुआ जिसका डर था

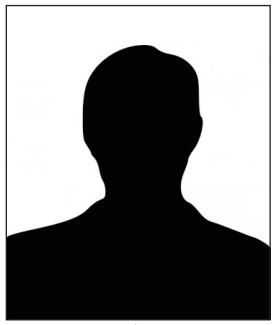

सुरेश
निवासी शिव दुर्गा विहार

6 बार सरकारी इलाज

टी0बी0 (यू0आई0डी0) नं0: टी.बी. नं0 ?/2006 आगरा, 956/10, 657/11, 784/12, 203/14, ?/2015 पी0एम0डी0टी0 नं0 431/15

भारत सरकार के संशोधित टी.बी. कार्यक्रम के साथ मैं एक डाट्स प्रोवाईडर के रूप में 2009 से जुड़ा हुआ हूँ। अब तक आस पास रहने वाले करीब 391 टी.बी. रोगियों को सरकारी डब्बों में से अपने हाथों से दवा के पत्ते खिला चुका हूँ।

सुरेश (बदला हुआ नाम) एक गरीब निवासी है। दुर्भाग्यवश वह शुरू से ही मेरे साथ जुड़ा हुआ है। वर्ष 2006 में पहली बार जब इसे टी0बी0 हुई तो तब इसने आगरा से सरकारी डाट्स का इलाज पूरा किया । जब यह दोबारा बीमार पड़ा तो मैने इसे पूरी दवा खिलाई । दुख की बात तो यह है कि हर साल मुझे इस के लिए एक नए सरकारी डब्बे की सील खोलनी पड़ती है और मुझे ही इसे दवा के पते खिलाने पड़ते हैं। सप्ताह में तीन खुराक वाला डाट्स का इलाज सुरेश को 6 बार खाना पड़ा है। अन्ततः वही हुआ जिसका मुझे डर था – उसे खतरनाक किस्म की टी.बी. जिसे मल्टी ड्रग रिजीटैन्टस टी.बी. कहते हैं बन गई है और अब उसका इलाज चल रहा है।

लेखक : डा0 गौतम डे,
डे पोलिक्लीनिक, डी–12,
शिव दुर्गा विहार, डाट्स प्रोवाईडर
मो. 9891439729

आर्थिक मदद देने के लिए कृप्या आप स्वयं मरीज से सीधा सम्पर्क करें:

सरकारी ईलाजों की गिनती भूल गया हूँ

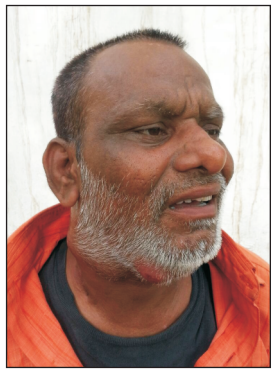

सलीम खान
सुपुत्र रजाक खान
गांधी कालोनी

5 या 6 बार सरकारी इलाज

टी.बी. नं.
?/2002, ?/2006,
533/2009, 338/2014,
360/2014, 418/2016

2002 में सलीम की छाती में दर्द शुरू हुआ । एक प्राईवेट हस्पताल वालों ने उसकी पसली में पानी बताया जिसकी जांच कर उसे टी0बी0 घोषित कर दी।

सलीम एक बहुत ही गरीब व्यक्ति है। आटो रिक्शा चला कर जैसे–तैसे अपने बीवी–बच्चों का गुजारा करता है। किराये के मकान में रहता है। जाहिर है ऐसे गरीब व्यक्ति के लिए महंगें–महंगें प्राईवेट हस्पताल तो पहुंच से बाहर होते हैं। इसलिए मुफ्त इलाज पाने के लिए वह सीधा जिला सरकारी हस्पताल बी.के. फरीदाबाद में जा पहुंचा। यहां उसका पहली बार 'सप्ताह मे दवा की 3 खुराक वाला' डॉट्स का इलाज चला। छः महीने में वो ठीक हो गया ।

लेकिन कुछ साल के बाद 2006 में उसे दोबारा टी.बी. का सरकारी डॉट्स का इलाज लेना पड़ा। इसके बाद भी टी.बी. की नामुराद बीमारी उसका पीछा नहीं छोड़ रही थी। उसके गले में बड़ी–बड़ी गांठें बन गई और 2009, 2014 और 2016 में फिर से टी.बी. के सरकारी डब्बे मुझे ही खोलने पडे तथा उसको आशावर्कर साबरा की मदद से दवा के पत्ते खिलाने पड़े। महरौली टी.बी. हस्पताल दिल्ली वालों ने उसकी एफ.एन.ए.सी. टैस्ट कर कल्चर लगाया है जिसकी रिपोर्ट 5 जून 2016 को सेन्सटिव (सही) आई है।

हाल ही में बहुत सीरियस हालत में उसे एक प्राईवेट नर्सिंग होम में भर्ती करवाया गया जहां उसे खून चढ़ाया गया । जान तो बच गई लेकिन परिवार धीरे–धीरे कर्जे में डूबता चला जा रहा है। उसकी दिमागी हालत बिगड़ती ही जा रही है।

मैने पूछा ''कितनी बार डॉट्स ले चुके हो?'' तो सलीम बोला ''इतनी बार कि अब गिनती ही भूल चुका हूँ''

लेखक :– पदमा रानी,
ए.एन.एम,
गांधी कॉलोनी
मो. 9213282921

आर्थिक मदद देने के लिए कृप्या आप स्वयं मरीज से सीधा सम्पर्क करें:
मोबाईल 8860097551

डॉट्स के पांच कोर्स

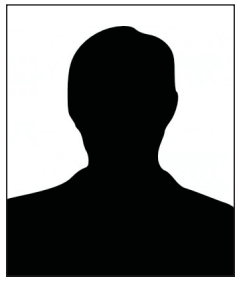

रामबीर
गांव जाजरू
फरीदाबाद, हरियाणा

5 बार सरकारी इलाज
टी.बी. नं. (यू.आई.डी.)
यह है : 303/2003,
139/2004, 223/2005,
162/2006, 440/2008

रामबीर ने टी.बी. होने पर 2003 में पहली बार मेरे सब सैन्टर से डॉट्स की दवा ली । मैं ही इसे 'सप्ताह मे दवा की 3 खुराक' खिलाता था ।

लेकिन ठीक होने पर जल्द ही वह दोबारा बीमार पड़ गया । यह सिलसिला बार–बार चलता गया । वह बार–बार टी.बी. से पीड़ित हो जाता था । करीब–करीब हर साल वह डाट्स प्रोग्राम में पंजीकृत होता चला गया। हर बार मैं ही उसे सरकारी दवा के पत्ते नियम से खिलाया करता था ।

पी.एच.आई. पन्हैड़ा खुर्द के तहत उसका ईलाज चला।

रामबीर का व्यक्तित्व कुछ मस्तमौला किस्म का था । बीड़ी व नशा पानी इत्यादि का परहेज नहीं करता था। कभी–कभी दवा लेने मे लापरवाही के चलते मैं उसको डांट देता या उससे नाराज हो जाता था। उसका भरा पूरा परिवार काफी खुशहाल था। गांव में उनका बहुत रुतबा था। वह खुद भी स्वभाव से बेहद मीठा व मिलनसार था । इसलिए हर बार गांव के बड़े बूढ़े उसकी सिफारिश ले कर मेरे पास पहुंच जाते और मुझे चुप लगानी पड़ती ।

आखिरकार 10 दिसम्बर 2009 को उसका देहान्त हो गया ।

आज भी जब मैं उनके घर के सामने से गुजरता हूँ तो मन में एक टीस सी उठती है। मैं सोचता हूँ कि 'सप्ताह मे दवा की 3 खुराक वाले' डॉट्स के सरकारी इलाज में क्या कमी है कि जो मरीज ठीक हो जाने पर भी फिर से दोबारा बीमार पड़ते जाते हैं ?

करण सिंह
एच. आई.
पी.एच.सी. पन्हैडा खुर्द
(पूर्व सबसैन्टर जाजरू)

आर्थिक मदद देने के लिए कृप्या आप स्वयं मरीज के परिवार से सीधा सम्पर्क करें:

मुड़–मुड़ के बीमार

सुभाष
सुपुत्र श्री राम स्वरूप
फरीदाबाद, हरियाणा

5 बार सरकारी इलाज

टी.बी. नं. (यू.आई.डी. नं.)
1371/2011, 470/2012,
682/2013
(ई.एस.आई. से),
74/2014, 002/2015

2011 में सुभाष को सबसे पहली बार जब टी.बी. घोषित हुई तो वो फौरन हमारे बल्लबगढ़ के सरकारी हस्पताल में डॉट्स के तहत पंजीकृत हुआ । उसके बाद तो उसका और हमारा मानो चोली दामन का रिश्ता बन गया । बस हर साल फिर से बीमार और फिर से दवा का एक और नया कोर्स ।

2011, 2012, 2013, 2014 और 2015 में पांच दफा डॉटस चला । 2013 में तो वह मुझ से रूठ कर चला गया। और उसने एन.आई. टी. में (संतो के गुरूद्वारे के सामने वाली) ई.एस.आई. डिसपैंसरी नं0 4 से टी.बी. नं0 682/2013 के तहत ईलाज लिया। मेरे सहकर्मी दिनेश टी.बी.एच.वी. से।

हर बार मुझ से बस यही पूछता था–'यह दवा मुझे ठीक क्यों नहीं करती, बीमारी की जड़ को क्यों नहीं उखाड़ती?' मैं निरूत्तर हो जाता। मैं खुद बहुत हताश था । ऐसे अनेकों मरीज 'सप्ताह मे दवा की 3 खुराक वाले' डॉट्स के ईलाज के बावजूद बार–बार बीमार पड़ रहे हैं।

5 अगस्त 2015 को सुभाष ने दिल्ली के राजन बाबू टी.बी. हस्पताल किंग्सवे कैम्प में दम तोड़ दिया।

लेखक:
विजयपाल, टी.बी.एच.वी.
जनरल हस्पताल बल्लबगढ
जिला फरीदाबाद।

आर्थिक मदद देने के लिए कृप्या आप स्वयं मरीज के परिवार से सीधा सम्पर्क करें:

.....

दोबारा

रिपोर्ट पढ़ कर मुझे बेहद अफसोस हुआ । आशीष को एम.डी.आर. घोषित किया गया था। लेकिन मुझे तो पहले ही अंदेशा था कि यह तो होना ही था। क्योंकि पिछले 4 सालों में आशीष 5 बार सरकारी डाट्स का इलाज हमारी ही डिसपैंसरी से ले चुका है। हर बार थोड़ा ठीक–ठाक हो जाता लेकिन जल्दी ही दोबारा टी.बी. से बीमार पड़ जाता था।

आशीष

5 बार सरकारी इलाज

टी.बी. नं. 1120/2011,
1175/2011, 1074/2012
और
पी.एम.डी.टी. नं. 323/2013

बडे दुख से कहना पड़ रहा है कि कैसी विडम्बना है?

मेरे पास ऐसे कई मरीज इलाज के बाद दोबारा–दोबारा बीमार हालत में इलाज के लिए वापिस आ रहे हैं, जैसे एन.आई.टी. मे रहने वाले ये दोनों भाई :–

साहिल टी.बी. नं0 001/2016 तथा ?/2016 ।

विशाल टी.बी. नं0 124/2015 तथा 397/2016 ।

लेखक : दिनेश
टी.बी.एच.वी.
ई.एस.आई. डिसपैंसरी नं. 4

आर्थिक मदद देने के लिए कृप्या आप स्वयं मरीज से सीधा सम्पर्क करें: (पी.पी0 नं0)

.....

साल दर साल

जगदीश

5 बार सरकारी इलाज

टी.बी. (यू.आई.डी.) नं.: 121/2012, 1058/2013, 170/2014, 171/2015ए
पी.एम.डी.टी. नं. ?

वर्ष 2012 की बात है। मेज पर बिखरी हुई अपनी रिर्पोटों से नजर उठाई तो देखा बाहर कोने में एक मरीज मुंह पर रूमाल बांधे हाथ जोड़ कर खड़ा था और टकटकी लगा कर मुझे देख रहा था। मैं फौरन उठ कर बाहर उसके पास गई। वह जगदीश था जिसकी बलगम की रिपोर्ट में किटाणु पाये गये थे। मैने फौरन उसका इलाज (टी.बी. नं. 121/2012) शुरू कर दिया। छः महीने में वह बिल्कुल ठीक हो गया।

अगले साल फिर एक दिन इसी तरह वह हाथ जोड़े खड़ा मिला। उसे दोबारा बीमारी हो गई थी । टी.बी. नं. 1058/2013 के तहत उसका टी.बी. का डाट्स का इलाज दोबारा किया। इस बार दवाई खाने में थोड़ी आना–कानी नजर आई। मेरे पूछने पर उसने बताया 'मेरे बेटे का एक्सीडैंट हो गया है, सारा पैसा उधर लग गया है, घर भी बेच डाला है, बहुत परेशान हूँ।'

अगले साल तीसरी बार डाट्स का इलाज टी.बी. नं0 170/2014 के तहत चला।

अगला साल भी क्यों बचना था । टी.बी. नं. 171/2015 में चौथा इलाज चला जो फेल साबित हुआ। आखिरी रिपोर्ट पोजिटिव आई। बाद में ड्रग रजिडैन्टस (एम.डी.आर.) टी.बी. घोषित की गई जिसका कि आज भी इलाज जारी है।

लेखकः रेखा रानी
टी.बी.एच.वी.
एफ.आर.यू.–1
सैक्टर 30 फरीदाबाद

आर्थिक मदद देने के लिए कृप्या आप स्वयं मरीज से सीधा सम्पर्क करें:

जिला फरीदाबाद : राष्ट्रीय टी.बी. प्रोग्राम का सन् 2000–2016 तक का लेखा जोखा। इस गहन अनुसंधान मे 6 साल लगे।

107 टी0बी0 रोगी जिन्होने डाट्स का सरकारी इलाज 4 बार लियाः

नाम	टी.बी. (यूनीक आई.डी.) नं.	पता	टी.बी. यूनिट
लेखराज पुत्र सौरन	955/2008, 1531/2009, 899/2010, 141/2011 मृत्यु	गांधी कालोनी, पदमा डाट्स प्रोवाईड	डी.टी.सी. फरीदाबाद
कन्हैया लाल पुत्र नन्दू	817/2007, 1027/2008, 1025/2009, 878/2010	ई.एस.आई. डिस्पैंसरी नं. 4	बल्लबगढ/ एफ.आर.यू–1/ डी.टी.सी.
सतपाल पुत्र मोहर सिंह	1141/2008, 887/2009, 587/2012, एम.डी.आर. और मृत्यु		एफ.आर.यू.–1 सैक्टर 30
सुनिता पत्नी राजेश	331/2012, 635/2013, 152/2014, पी.एम.डी.टी. नं. 294/2014	डबुआ कालोनी	डबुआ
सन्नी पुत्र बसंत	771/2011, 265/2012, 650/2013, 407/2014	सीही गांव, सीमा डाट् प्रोवाईडर	पाली/तिगांव
गुरनाम सिंह पुत्र जयराज सिंह	1294/2010, 786/2011, 416/2012, 394/2013	गांव नरहावली, दयालपुर	मोहना
सतीश पुत्र नारायण	546/2013, 1171/2013, 112/2015, 748/2015	विजय पाल टी.बी.एच.वी.	बल्लबगढ

नोट :– जगह की कमी के कारण बाकी 100 नाम यहां छापना संभव नहीं है। पूरी सूची उचित समय पर संपादक की वेबसाईट www.tbfreeworld.org पर डाल दी जाएगी।

चौथी मुलाकात

ओम प्रकाश सुपुत्र श्री चरण सिंह
फरीदाबाद, हरियाणा

4 बार सरकारी इलाज

टी.बी. नं.
500 / 2013,
124 / 2014, 132 / 2016

प्रायः उदास से माहौल वाली हमारी खेडीकलां की ओ.पी.डी. में खिलखिला कर भागते हुए चार छोटे–छोटे बच्चों को देख कर मेरे थके मन को थोड़ी राहत मिली। मैने पूछा 'अरे किस के बच्चे हैं?' 'जी मेरे', उनके पिता ओम प्रकाश को मैने पहचान लिया – हमारा पुराना मरीज । वह उदास स्वर में बोला 'जी आज चौथी बार मुझे टी.बी. घोषित हो गई है । बलगम में कीटाणु पाये गये हैं'। उसकी बलगम की रिपोर्ट **'3+ लैब नं0 2027 डी0टी0सी0 12–4–2016'** पढ़ कर मुझे धक्का सा लगा । यह हो क्या रहा है ? डॉट्स का इलाज सही ढंग से कराने के बावजूद मरीज फिर से दोबारा बीमार पड़ कर वापिस क्यों आ जाते हैं ?

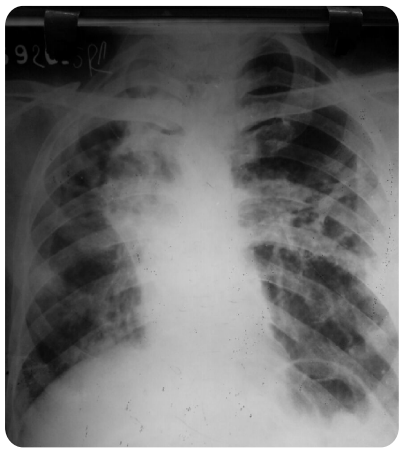

ओम प्रकाश ने टी.बी. होने पर पहला सरकारी इलाज 'सप्ताह मे दवा की 3 खुराक वाला' (डॉट्स) 2009 में अपने गांव उच्चैन, भरतपुर, राजस्थान से लिया था। दूसरा व तीसरा डॉट्स का कोर्स (टीबी0 नं0 500 / 2013 तथा 124 / 2014) उसने भारत कालोनी ओल्ड फरीदाबाद खेड़ीकलां से ही चलवाया था ।
आज चौथी बार इलाज चालू करते हुए मेरा मन बहुत भारी था। (टी.बी. नं0 132 / 2016) यह सिलसिला तो थमने का नाम ही नहीं ले रहा। बार–बार बीमार पड़ने वाले ऐसे कई मरीजों को मैं स्वयं मिल चुका हूँ। और उनका ईलाज बार बार कर चुका हूँ।

अध्यापक बनने के सपने को सजों कर ओम प्रकाश 2010 में राजस्थान से फरीदाबाद आ पहुंचा था। ना बीड़ी–सिगरेट ना शराब इत्यादि–कोई बुरी लत नहीं। मास्टरी तो दूर, बेचारा बेलदारी व मजदूरी करने पर मजबूर है। 6 जन के परिवार का बोझ जैसे कैसे ढोता जा रहा है। 'तीन महीने से तो खांसी बुखार में तड़प रहा है । घर में एक किलो आटा तक नहीं बचा। इनकी आधी जिदंगी तो अपनी पढ़ाई में बीत गई और बाकी की आधी टी.बी0 के चक्कर में' कह कर मियां बीबी की आंखों से आंसू के झरने बह निकले ।

लेखकः जसवंत
सुपरवाईजर, खेडीकलां, टी.बी. यूनिट
मो. 9212882883

आर्थिक मदद देने के लिए कृप्या आप स्वयं मरीज से सीधा सम्पर्क करें:
ओमप्रकाश 8447583257

मुकद्दर में टी.बी. अस्पताल

मनोज
शिव दुर्गा विहार,
लक्कड़पुर, फरीदाबाद,
हरियाणा

4 बार सरकारी इलाज

टी.बी. नं 441/2012,
973/2013,
480/2014, 238/2016
डाट्स प्रोवाईडर डॉ. डे
(9891439729)

2012 में मनोज को पहली बार टी.बी. हुई । सूरजकुण्ड लक्कड़पुर की सरकारी डिस्पैंसरी से 'सप्ताह मे दवा की 3 खुराक वाला' डॉट्स का छः महीने इलाज चला । कुछ ठीक हुआ परन्तु अगले वर्ष 2013 में, फिर 2014 में बीमारी बार–बार उभर आती ।

पिता की मौत हो चुकी है। उसकी विधवा मां, विधाता देवी भारतीय रेलवे में खलासी की नौकरी करती थी, लेकिन अब रिटायर हो चुकी है। बस उसी की थोड़ी सी पैंशन से जैसे–तैसे रोटी चलती है।

हाल ही में मनोज के छोटे भाई मोहन को भी टी.बी. लग गई है और उसका भी डॉट्स का इलाज हमारे ही विभाग के तहत शुरू हो चुका है।

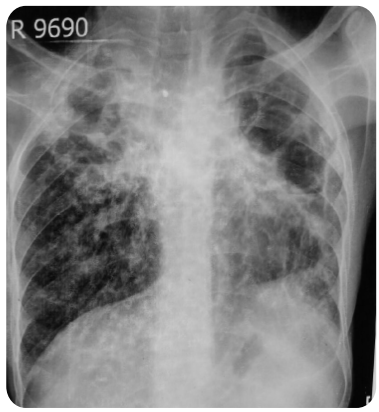

अभी 7–5–2016 को भी हमारे जिला टी.बी. केन्द्र से मनोज की बलगम की जांच (लैब नं0 2769) 3+ पोजिटिव आई है और डॉट्स का चौथा चक्कर शुरू हो गया है।

मनोज के बार–बार बीमार पड़ने से उसकी माँ बेहद परेशान रहती है।'मेरे मुकद्दर में तो टी.बी. हस्पतालों के धक्के खाना ही लिखा हुआ है' वह रोते हुए कहती रहती है।

लेखक:
रमेश चन्द टी.बी.एच.वी.
डी.टी.सी. फरीदाबाद

आर्थिक मदद देने के लिए कृप्या आप स्वयं मरीज से सीधा सम्पर्क करें:

मनोज के मोबाईल : 9560909731, 9958868499

जिला फरीदाबाद : राष्ट्रीय टी.बी. प्रोग्राम का सन् 2000–2016 तक का लेखा जोखा। इस गहन अनुसंधान मे 6 साल लगे।

556 टी.बी. रोगी जिन्होने डाट्स का सरकारी इलाज 3 बार लियाः

नाम	टी.बी. (यूनीक आई.डी.) नं.	पता	टी.बी. यूनिट
भौरी बाबा	1086/2006, 64/2008, 1053/2008, मृत्यु	विजय पाल टी.बी.एच.वी.	बल्लबगढ़
रिंकू पुत्र राधे	92/2014, 272/2014, 89/2016	सिविल डिस्पैंसरी, ओल्ड फरीदाबाद, ज्योति टी.बी.एच.वी.	एफ.आर.यू.–1 सैक्टर 30
सतीश पुत्र खलीन्दा राम	175/2015, 561/2015 ?, 283/2016	ई.एस.आई. डिस्पैंसरी नं. 4	डी.टी.सी.
हितेश पुत्र कन्नी राम	286/2014, 293/2015, 56/2016?	सीही गांव	पाली/तिगांव
इमरान पुत्र नजीर अहमद	021/2013, 195/2015, 102/2016	रोशन नगर, सेहतपुर	पल्ला
बुद्धसिंह पुत्र रामरीक	003/2013, 553/2014, 309/2015	गांव पलवली	पल्ला

नोट :– जगह की कमी के कारण बाकी 550 नाम यहां छापना संभव नहीं है। पूरी सूची उचित समय पर संपादक की वेबसाईट www.tbfreeworld.org पर डाल दी जाएगी।

जिन रोगियों के नाम पते इस पुस्तक में प्रकाशित किऐ गए है, हम उनसे क्षमा प्रार्थी है। लेकिन पारदर्शिता हमारी मजबूरी है – ताकि एक घिनौना सच उजागर व सत्यापित हो, घोर अन्याय रुके, शीघ्राति शीघ्र सरकार जागे, इलाज उत्तम बने और लाखों रोगियों का भला हो। क्योकि इन्सानी जीवन (व स्वास्थ्य) सर्वोपरि है।

सम्पादकः डॉ. रमन कक्कड़

ईलाज का तीसरा दौर

हरि प्रसाद
ओल्ड फरीदाबाद,
हरियाणा

3 बार सरकारी इलाज
टी0बी नं0 20/2014,
278/2014, 113/2016
ज्योति (टी.बी.एच.बी.)
डाट्स प्रोवाईडर

2014 में हरि प्रसाद (बदला हुआ नाम) को पहली बार टी.बी. की बीमारी हुई थी। 'सप्ताह मे दवा की 3 खुराक वाले' इलाज को बार बार करवाने के बावजूद भी उसकी हालत गिरती ही चली जा रही है। डॉट्स का आजकल तीसरा कोर्स चल रहा है लेकिन हालत काफी नाजुक है। हाल ही में मार्च के आखिरी हफ्तों में वह दिल्ली के सफदरजंग हस्पताल में भर्ती रह कर आया है।

इसके एक्सरे में कैविटी हैं तथा उसकी बलगम की 18–3–2016 की रिपोर्ट लैब नं0 1634 जिला टी0बी0 केन्द्र फरीदाबाद में टी0बी0 के कीटाणु 1+ पोजिटिव पाये गये हैं।
''जी, क्या मेरा बेटा बच पायेगा?'' उसकी मां के इस दर्दनाक सवाल का मेरे पास कोई जवाब नहीं है।

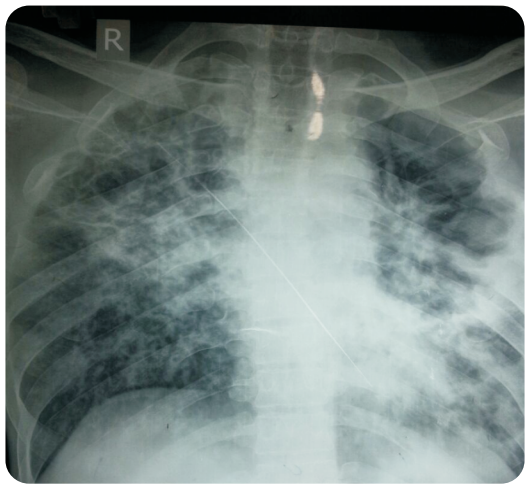

भारत का नागरिक टी.बी. से पीड़ित हो कर भारत सरकार की शरण में पहुंचता है। पूरी आस्था के साथ सरकार के डॉट्स नामक इलाज को अपनाता है। वह लगकर 6 से 8 महीने तक नियम से कड़वी कड़वी दवाईयां खाता है। वह भारत सरकार पर पूरा भरोसा कर आश्वस्त रहता है। इस सबके बाद वह उम्मीद करता है कि अब इस नामुराद बीमारी से उसका पीछा हमेशा के लिए छूट जायेगा । क्या इतनी सी उम्मीद रखना कोई बहुत बड़ी बात है? ऐसी आशा रखना तो कदाचित जायज है।
लेकिन अगर भरोसा टूट जाए तो कितना दुख होता है।

लेखक : डा. रमन कक्कड़
www.tbfreeworld.org

आर्थिक मदद देने के लिए कृप्या आप स्वयं मरीज से सीधा सम्पर्क करें:

हालत गिरती ही गई

प्रवीन कुमार
निवासी सै0. 24 मुजेसर ,
ई.एस.आई. डिस्पैंसरी नं. 4

टी.बी. (यू.आई.डी.) नं. 447/2011,
पी.एम.डी.टी. नं0 138/2014,
एक्स.डी.आर. नं0 ?/2015,
मृत्यु 25–12–2015

वह तीनों भाई इकटठे ही मेरे पास आये । तीनों बेहद परेशान दिखते थे। जाहिर है कि तीनों में बहुत प्यार था। मैं जो कुछ भी पूछता वह तीनों एक साथ ही बोल उठते थे । मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था । मैं बिल्कुल कन्फयूज था। मैने रौब से पहले उन सब को चुप कराया और पूछा "अरे भाई, तुम तीनों में से मरीज कौन है ? बस वही मेरे सवालों का जवाब दे" ।

बीच वाला भाई 16 साल का प्रवीन टी.बी. रोगी निकला। सबसे पहले उसने टी.बी. नं. 447/2011 के तहत सरकारी डाट्स का इलाज लिया था। एन.आई.टी. एल.आर.एस. महरौली टी.बी. हस्पताल से अपना एल.पी.ए. टैस्ट (नं. 8157) करवा कर ड्रग रजिस्टैन्ट (एम.डी.आर.) टी.बी. के इलाज के लिए मेरे पास आया था।

उसका चौथी श्रेणी का इलाज पी.एम.डी.टी. नं0 138/2014 के तहत मैने साल भर से ऊपर किया । बाद में हालत गिरती गई और वह दिल्ली के महरौली टी.बी. हस्पताल में भर्ती हुआ । सुनने में आया कि वहां वह लीवो फ्लोक्स रजिस्टैन्ट भी हो गया तथा वहां उसका एक्स.डी.आर. का इलाज चालू किया गया।

25 दिसम्बर 2015 को वह चल बसा ।

लेखक – सुभाष गहलौत
डी.पी.एस.,
सिविल अस्पताल, फरीदाबाद

आर्थिक मदद देने के लिए कृप्या आप स्वयं मरीज से सीधा सम्पर्क करें: (पी.पी0 नं0)

वसीयतनामा

विजय पाल
टी.बी.एच.वी., सरकारी
अस्पताल एम्स बल्लभगढ़

"डाक्टर साहब, आप मुझे बेकार सी दवाई दे देते हो। ढंग की बढ़िया दवाइयाँ दो ना। आपकी दवा से मैं बस महीना भर ठीक रहा। अब फिर वही खाँसी, बुखार, कमजोरी। "

बिरम सिंह की बात सुनकर मुझे बहुत गुस्सा आया। पूरे बल्लभगढ़ में इतना लापरवाह मरीज दूसरा कोई ना था। 4 महीने पहले इसकी बलगम की जाँच में 3 प्लस कीटाणु मिले थे और मैंने इसका टी.बी. का इलाज चालू किया था। मेरे लाख समझाने पर भी यह बाहर ताजी हवा में रहने की बजाए अपने छोटे से बंद कमरे में 4 छोटे–छोटे बच्चों के साथ लेटा रहता था। मुँह पर कभी रुमाल नहीं बांधता था। मुँह खोलकर खाँसता रहता था और वहीं कमरे में ही 24 घण्टे थूकता रहता था। रोज शाम को दारु भी पीता था। इतना ही नहीं, जब इसको काफी आराम आ गया तो इसने अपना दवा का कोर्स बीच में ही छोड़ दिया। इसके घर के कई चक्कर लगाने के बावजूद मैं इसे मनाने में सफल न हो पाया व इसका इलाज पटरी पर नहीं ला पाया। कई महीनों के अंतराल के बाद आज अचानक ये टपक पड़ा है और उल्टे डॉटस की दवाईयों को दोष दे रहा है, मुझे कोस रहा है।

खैर, मैंने इसका पुराना खाता (टी.बी. नं0 727/06) निकाला तथा फिर इसकी दोबारा जांच करवाई। टी.बी. का प्रकोप बहुत बढ़ा हुआ पाया गया। बलगम में फिर 3 प्लस किटाणु मिले। मैंने इसको कसमें दिलवाकर, खूब समझा बुझा कर दोबारा दूसरी श्रेणी में डालकर इसका इलाज चालू करवा दिया (टी.बी. नं0 627/07)। लेकिन यह सुधरने वाला कहाँ था। 2 महीने बाद थोड़ा ठीक होने पर बीरम सिंह फिर गायब हो गया। खुद तो नहीं आया पर बाद में बुरी खबर आई कि वह परलोक सिधार गया है। लेकिन जाते–2 मानो अपनी वसीयत में अपनी बीमारी अपनी पत्नी सोनिया को दे गया। जिसका ईलाज टी.बी. नं0 770/08 के तहत मैंने शुरु किया। देखते ही देखते उसकी तीन बेटियाँ मीनाक्षी (टी.बी. नं0 187/09), दीप्ति (टी.बी. नं0 198/09), विद्या (टी. बी. नं0 199/09) भी इलाज के लिए मेरे पास चली आई।

उसका बेटा सुमित भी बीमार पड़ गया (टी.बी. नं0 200/09)। बिरम सिंह के भाई विजेन्द्र की दो बेटियाँ भी टी.बी. के लपेटे में आ चुकी थी–चंचल (टी.बी. नं0 224/09), और नीमा (टी.बी. नं0 225/09)। उसके दूसरे भाई राजेन्द्र का बेटा साहिल भी टी.बी. से पीड़ित हुआ (टी.बी. नं0 201/09)। उसके भाई गजेन्द्र खुद का भी इलाज चला (टी.बी. नं0 318/11) जो किन्हीं कारणों से सफल न हो पाया तथा अब उसका ऊपरी श्रेणी का इलाज चल रहा है (टी.बी. नं0 335/12)

सरासर लापरवाही के चलते बीरम सिंह ने अपनी अलिखित वसीयत में अपने परिवार के कम से कम 9 सदस्यों को टी.बी. की बीमारी विरासत में दे दी। 2009 में इस परिवार के छोटे–2 सात बच्चों का इलाज दिल पर पत्थर रखकर कैसे किया ये मैं ही जानता हूँ या मेरा भगवान जानता है। इनमें से एक बच्ची चंचल बेचारी को तो इलाज के बावजूद मैं बचा नहीं पाया।

अभी जंग जारी है।

भारत का टी.बी. प्रोग्राम; सप्ताह में दवा की केवल तीन खुराकें देना – सही या गलत ?

साराँश

पृष्ठभूमि :

शताब्दियों तक टी.बी. (तपेदिक या क्षयरोग) एक लाइलाज बीमारी थी । करीब 50–60 वर्ष पूर्व इसके इलाज की खोज हुई – 'रोजाना खिलाई जाने वाली पांच दवाए' जो कि मानव जाति के लिए एक चमत्कार सिद्ध हुई।

बाद में, कुछ अध्ययनों में दावा किया गया कि इन्हीं पांच दवाओं को यदि (रोजाना की बजाय) सप्ताह में केवल तीन बार ही खिलाया जाये तो भी ये बढ़िया असर करती हैं। लेकिन दुनिया के ज्यादातर वैज्ञानिक/डॉक्टर/अध्ययन इससे सहमत न दिखे। जिसके चलते टी.बी. से अधिक पीड़ित 22 में से 20 देशो में आज भी रोजाना दवा खिलाने का चलन निरन्तर जारी है ।

भारत एक अपवाद :

1998 मे भारत ने 'सप्ताह मे तीन खुराक' वाली प्रणाली को अपना लिया। अब तक राष्ट्रीय अभियान (डॉट्स) के तहत करीब ड़ेढ़ करोड़ टी.बी. रोगियों का इलाज सप्ताह में तीन बार दवा खिलाकर किया जा चुका हैं तथा ये सिलसिला आज भी जारी है ।

अध्ययन का उद्देश्य :

यह सुनिश्चित करना कि 'सप्ताह में तीन खुराक' वाली इस प्रणाली से मरीज को क्या वाकई में स्थाई स्वास्थ्य लाभ मिलता रहा है ? ऐसे मरीज की पहचान करना जो एक बार ऐसा इलाज कराने के बाद भी दोबारा पंजीकृत हुआ यानि उसको दूसरी पारी भी लेनी पड़ी । ऐसे पुनरावृति वाले मरीजों को चुन–चुन कर उनकी सूची तैयार की गई। इस कार्य में 6 साल लगे ।

कर्मक्षेत्र :

भारत का फरीदाबाद जिला तपेदिक केन्द्र, जहाँ लेखक पिछले 6 साल से बतौर टी.बी. चिकित्सक नियुक्त है, तथा उसे हजारों नए–पुराने टी.बी. रोगियों पर नजर रखनी पड़ती है, जो 'सप्ताह में तीन दिन' वाला सरकारी इलाज ले रहे हैं ।

डाटा संग्रहण की पद्धति :

1. पुराने टी.बी. के खातों का अध्ययन : लेखक ने जिले के सभी टी.बी. कर्मचारियों को प्रेरित किया। सबने मिलकर पिछले 15 सालों के हाथ से लिखे रजिस्ट्रों को एक–एक कर खंगाला तथा धीरे–धीरे ऐसे 1575 मरीजों को ढूँढ

निकाला, जिनका नाम राष्ट्रीय पंजीयन पुस्तिका में एक से ज्यादा बार दर्ज पाया गया ।

2. लेखक ने ओ.पी.डी. में रोजाना आने जाने वाले हर ऐसे मरीज को पकड़ा, जो डाट्स के इलाज के लिए दूसरी बार पहुँचा था । औसतन दूसरी पारी वाला ऐसा एक मरीज प्रतिदिन पहचाना जा सका। बूंद – बूंद से घड़ा भरता गया। 6 सालों मे 3100 एसे मरीज मिल पाये। इनमें से करीब आधे तो दिल्ली तथा फरीदाबाद के नामी गरामी अस्पतालों से टी.बी. की बीमारी की सटीक पहचान करवाकर क` व ल पुनः पंजीकरण के लिए पहुँचे थे।

परिणाम :

सप्ताह में तीन खुराक वाली पद्वति द्वारा इलाज कराये हुए कुल 36,785 मरीजों की जीवनी तथा 15 सालो के टी.बी. खातों के गहन अनुसंधान में कुल 4675 मरीज ऐसे पाये गये, जो मुड़–मुड़कर बीमार हालत में इलाज के लिए वापस आते गए । ऐसे पुनरावृति वाले मरीजों की संख्या 12.7% पाई गई । इन सबके केवल नाम एवम् पते ही नहीं बल्कि सरकार द्वारा चिन्हित विषेश पहचान संख्या (यू.आई.डी.) भी ढूँढ निकाले गए तथा एक्सेल व साफ्ट वेयर मे रोजाना दर्ज किये गये जो कि सबसे पक्का सबूत होता है। इसके अलावा 1590 (4.9%) मरीज मर गये तथा 2590(8.0%) मरीजों ने इलाज अधूरा छोड़ा ।

यह अध्ययन एक छुपी हुई भारी कमी को उजागर करता है । राष्ट्रीय अभियान के बहुचर्चित 85 प्रतिशत सफलता के सरकारी आँकड़े किसी फूले हुए गुब्बारे के समान है ।

निष्कर्ष:

राष्ट्रीय अभियान के तहत सप्ताह में तीन बार दवा खिलाने की प्रणाली मरीजों को लम्बे समय के लिए स्वस्थ करने में असफल साबित हुई है। दवा की खुराके घटाने से मानो चमत्कारिक इलाज की आत्मा ही निकल गई हो। इलाज के बावजूद मरीज बार–बार, बीमार हो कर वापस आ रहे हैं। जो कि भारी मात्रा में मल्टी ड्रग रेजिस्टेंस (एम.डी.आर.) तपेदिक के चलन को पैदा कर रहे हैं । दुनिया के टी.बी. के मरीजों के बोझ का पाँचवा भाग भारत वहन करता है। अतः लाइलाज टी.बी. का यह नया मंडराता हुआ खतरा केवल भारत ही नही बल्कि समस्त मानव जाति के लिए एक अभीशाप हो सकता है।

डॉ. रमन कक्कड़ फरीदाबाद

www.tbfreeworld.org

भारत के टी.बी. रोगी से अन्याय

डाक्टर बन कर लेखक ने जब से होश संभाला है टी.बी. रोगियों के साथ हो रहे अन्याय को महसूस किया है । समय के साथ सुधार होने की बजाये नाइंसाफी बढ़ती ही चली गई । अब पिछले 19 सालों से तो यह चरम सीमा पर है। अन्याय के छुपे हुए 8 पहलु हैं :–

1. अनुसंधान की कमी: टी.बी. गरीब की बीमारी है । वैज्ञानिकों को इस के शोध में कोई लाभ नहीं मिलता । अतः इसमें खोजबीन करने में किसी की कोई रूचि नहीं है । इसलिए ना कोई नई दवा, ना वैक्सीन का टीका और ना ही कोई टैस्ट ईजाद हो पाया। वही 60 साल पुरानी पहली पंक्ति की 5 दवायें, 95 वर्ष बूढ़ी वैक्सीन (बी. सी.जी.) तथा 134 साल पुरानी बलगम की जांच ही आज भी भारत के राष्ट्रीय प्रोग्राम (डॉट्स) की रीढ़ की हड्डी हैं। (CB NAAT, LPA, वैब बेस्ड निक्षय इत्यादि तो अभी नवजात शिशु समान है)

2. 30 साल का पिछडापन: भारत का पहला राष्ट्रीय प्रोग्राम (1962 से 1992) अघोषित विफल था। इस के तहत बाबा आदम के जमाने वाली कमजोर एस.टी. एच. दवाओं से इलाज किया जाता रहा जो डेढ़ साल में मरीज को ठीक कर पाता था। हालांकि दुनियां भर में 1966 के आस–पास जादूई दवायें (Rifamycin, Pyrazinamide, Ethambutol) इजाद व उपलब्ध हो चुकी थी। जिनसे उपचार की अवधि घट कर छः महीने हो जाती है। भारतवासियों को ये बढ़िया दवायें सन् 2000 के बाद डाट्स के अन्तर्गत उपलब्ध करवाई गई। यानि भारत वर्ष दुनियां से 30 साल तक पिछड़ा रहा । केन्द्र सरकार सोती रही।

3. अवैज्ञानिक चुनाव; एक ऐतिहासिक चूक: 1997 में भारत की केन्द्र सरकार के कुछ वैज्ञानिकों व अफसरों ने डब्लयू.एच.ओ. की देख–रेख में रोजाना दवा देने की चिर–परिचित पद्धति को ही त्याग दिया । उसकी बजाये सप्ताह में केवल तीन खुराक वाले अवैज्ञानिक (लेकिन बेहद सस्ते) इलाज को अपना लिया। यह एक अजीबो गरीब परिवर्तन था जो कि पूरे भारत पर चुप–चाप थोप दिया गया। इस गलत चुनाव से तो मानों हमने विजय को जानबूझ कर पराजय में बदल दिया। मानो विजयश्री के जबड़ों से पराजय को खींच निकाला।

4. 24 बनाम 60 टीके : पहली बार टी.बी. होने पर रोगी को परम्परागत चार दवाएं खिलाई जाती हैं। दोबारा टी.बी. उभरने पर (द्वितीय श्रेणी में) इन चार दवाओं

के साथ–2 एक टीका देने का भी प्रावधान है। नेपाल में रोजाना दवा खिलाने वाली पद्धति का चलन है। वहां शुरू के दो महीनों में एक टीका रोजाना लगता है। यानि मरीज को कुल 60 टीके लगते हैं। नेपाल की ही तरह करीब–2 विश्वभर में 60 टीके ही प्रायः दिये जाते हैं।

भारत मे सप्ताह में तीन (यानि केवल 24 टीके) दिये जाते हैं। पूरी दुनियां में शायद भारत ही अकेला ऐसा देश है जहां इतने कम (यानि 24) टीके लगाये जाते हैं।

5. जख्मों पर नमकः टीकों की इस योजनाबद्ध भारी कटौती के अलावा भारत में समय–समय पर दवाईयों की कमी भी हो जाती है। अतः कोई गारंटी नहीं कि मरीज को उसके हिस्से के मात्र 24 टीके भी सही ढंग से उपलब्ध हो पायेंगें या नहीं । भारत की केन्द्र सरकार ने तीन सालों में (2011 से 2014 तक) कुल 40 लाख टीके खरीदे जबकि उससे पिछले तीन सालों में उसने ढाई करोड़ टीके खरीदे थे।

6. एक अकेला सुपरवाईजर रिपोर्ट बनाता हैः टी.बी. प्रोग्राम को सुनियोजित ढंग से चलाने के लिए सम्पूर्ण भारत वर्ष को 2698 टी.बी. इकाईयों (टी.बी. यूनिट्स) में बांटा गया है। हर इकाई की अन्तिम रिपोर्ट भेजने की पूरी जिम्मेवारी केवल एक बन्दे पर रहती है– सुपरवाईजर (एस.टी.एस.)। सुपरवाईजर, अपने फैले हुए इलाके में लगातार फोन करता रहता है तथा सरकारी मोटरसाईकिल पर घूमता रहता है ।

वह स्वास्थ्यकर्मियों तथा मरीजों से मिलकर हरेक के इलाज के नतीजे अपने बही खातों में दर्ज करता चला जाता है। सभी आंकड़ों का निचोड़ निकाल कर वह खुद तिमाही रिपोर्ट तैयार करता है तथा कम्प्यूटर से ऊपर भेजता है। इस पूरी प्रक्रिया को वह अकेले ही अनिरीक्षित ढंग से अंजाम देता है। मार्गदर्शक पुस्तिका में चाहे कुछ भी लिखा हो । सुपरवाईजर भली भांति जानता है कि उसे सफलता का आंकड़ा हर बार 85 प्रतिशत प्रस्तुत करना ही है। वर्ना उसका अनुबन्ध व नौकरी खत्म और उसके बच्चे भूखे मरेंगें। इसलिए जमा किये आंकड़ें धरातल पर चाहे कुछ भी दर्शाते रहें, अन्तिम रिपोर्ट अति सुन्दर (पूर्व निर्धारित लक्ष्य के अनुसार यानी 85% सफलता) ही भेजी जाती है जो कि कम्प्यूटर के जरिये से दुनियां भर में पहुंचती है तथा वाह वाही लूटती है।

7. भारत का प्रोग्राम सबसे आश्चर्यजनकः सोचने वाली बात ये है कि भारतीय डाक्टरों को छोड़, दुनियां भर के डाक्टर क्या नासमझ है?जो एक इतने सस्ते इलाज को नकार रहे हैं। डब्लू. एच.ओ. ने दुनिया के 22 ऐसे देशों को चिन्हित

किया है जिनमे टी.बी. का प्रकोप सर्वाधिक है। जिनमें भारत का पहला स्थान है। असल में मानवता की टी.बी. से जंग इन्ही 22 देशों में लडी जा रही है। इनमे से 20 देशों मे रोजाना दवा खिलाने का चलन है। (जैसे इन्डोनेसिया, दक्षिण अफ्रीका, कीनिया, ब्राजील, बांगलादेश, पाकिस्तान, रूसी फेडेरेशन तथा नाईजीरिया इत्यादि)।

Ref. INT J TUBERC LUNG DIS 15(6):746–753 © 2011 The Union doi:10.5588/ijtld.10.0094

Implications of the current tuberculosis treatment landscape for future regimen change

8.पहला मौका सुनहरी मौका : यानि पहली बार टी0बी0 होने पर दवा बढ़िया काम करती है। पूर्णतया ठीक होने की संभावना 85 प्रतिशत होती है । जो दूसरी पारी में घट कर केवल 64 प्रतिशत रह जाती है । क्योंकि दवायें धीरे–2 बेअसर होती चली जाती हैं। उसके बाद तो मरीज का स्वास्थ्य राम भरोसे होता है । क्योंकि हर बार इलाज के दौरान थोडी बहुत ड्रग रजिस्टैंस पैदा होती है। यानि कीटाणु की रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती जाती है। भारत के 'सप्ताह में दवा की तीन खुराक' वाले इलाज में एक भारी कमी बिल्कुल स्पष्ट हो चुकी है – बहुत से मरीज मुड़–मुड़ कर बीमार पड़ रहे हैं । सफल इलाज के बावजूद भी वही चेहरे बार–बार पंजीकृत होते चले जा रहे हैं। ऐसे पुनरावृत्ति वाले करीब 5000 मरीज तो केवल एक जिले (फरीदाबाद) में ही पाए जा चुके हैं जिनका कि पंजीकरण एक से ज्यादा बार दर्ज पाया गया है (लेखक व उसकी टीम की 6 साल की गहन रिसर्च का सारांश पढ़ें पेज नं. 20–21)। इस हिसाब से भारतवर्ष के डेढ़ करोड़ टी0बी रोगियों (कि जिनको डाट्स के तहत सप्ताह में तीन खुराक वाला इलाज दिया जा चुका है) में से करीब 20 लाख ऐसे पुनरावृत्ति वाले मरीज होंगें जो कि लाइलाज बीमारी के कगार पर हैं । उन्हें ठीक करना अब टेढ़ी खीर है। सप्ताह में तीन खुराक वाले अवैज्ञानिक, कमजोर, अधकचरे इलाज का 19 साल तक बेरोक–टोक चलते चले जाना सरकार की संवेदनहीनता का सबूत है।

भारत को फौरन रोजाना दवा खिलाने वाला इलाज अपना लेना चाहिए। हालांकि पहले ही बहुत देर हो चुकी है।

सब कुछ लुटा के होश में आए तो क्या किया ?

www.tbfreeworld.org

डॉ. रमन कक्कड़ फरीदाबाद

फिर वही कड़वी दवाएं

रामदेव

4 बार सरकारी ईलाज

टी.बी. (यू.आई.डी.) नं. 1080/2011, 916/2012, 012/2013, 370/2015, मृत्यु तिथि 10/10/2015

एक तो गरीबी, ऊपर से बीमारी और वो भी टी.बी. की । रामदेव बेहद लाचार था। ना कमाई, ना दो वक्त की रोटी। पहली बार उसका सरकारी डॉट्स का ईलाज 1080/2011 के तहत सिविल अस्पताल बी.के. से चला। आराम ना होने पर उर्मिल दीदी ने 916/2012 के तहत ऊपरी श्रेणी का ईलाज किया।

2013 में भी सरकारी ईलाज लिया। लेकिन बीमारी तो जैसे हाथ धोकर पीछे ही पड़ गई थी। परिवार ने भी साथ छोड़ दिया था। टी.बी. नं. 370/2015 के तहत हाल ही में मैंने उसका ईलाज चलाया। वह कड़वी और गर्म दवाईयों से दुखी हो चुका था। बार–2 मुझसे कहता ''फिर वही कड़वी दवाएं?'' मेरे लाख समझाने पर वो दवाईयां तो खा लेता लेकिन हालत गिरती ही गई। 10/10/2015 को वह परलोक सिधार गया।

लेखक : शशिबाला
टी.बी.एच.बी.
सैक्टर–21डी, डिस्पैन्सरी

भारत का सरकारी टी. बी प्रोग्राम एक अजूबा है:

1. दुनिया भर में टी.बी. की दवा रोजाना खिलाई जाती है। ज्यादातर देशों में सप्ताह मे दवा की सात खुराकें देने का चलन है। परन्तु भारत मे सप्ताह मे दवा की केवल 3 खुराकें दी जाती है।
2. पूरी दुनिया मे शायद भारत ही अकेला ऐसा देश है जहाँ (द्वितीय श्रेणी के) टी.बी. रोगी को बहुत कम (यानि 24) टीके लगाऐ जाते है। बाकी देशों मे प्रायः 60 टीके दिये जाते है।

सम्पादकः डॉ. रमन कक्कड़

आर्थिक मदद देने के लिए कृप्या आप स्वयं मरीज से सीधा सम्पर्क करें:

जिला फरीदाबाद : राष्ट्रीय टी.बी. प्रोग्राम का सन् 2000–2016 तक का लेखा जोखा। इस गहन अनुसंधान मे 6 साल लगे।

1618 टी.बी. रोगी जिन्होने डाट्स का सरकारी इलाज लिया लेकिन इनकी मृत्यु हुई।

नाम	टी.बी. (यूनीक आई.डी.) नं.	पता	टी.बी. यूनिट	मृत्यु तिथि
रीता / राधेश्याम	120 / 2016	शशिबाला टी.बी.एच.वी. सैक्टर–21डी	डी.टी.सी. फरीदाबाद	18 / 03 / 2016
धौरादेवी / फूलचन्द	195 / 2016	ई.एस.आई. डिस्पैंसरी नं. 4	डी.टी.सी. फरीदाबाद	28 / 04 / 2016
सपना / सतीश	197 / 2016	डबुआ कॉलोनी	डबुआ कॉलोनी	09 / 05 / 2016
शैलेन्द्र सुपुत्र रामप्रकाश	021 / 2016	डबुआ कॉलोनी	डबुआ कॉलोनी	23 / 03 / 2016
सुरेश सुपुत्र प्रेम भल्ला	027 / 2016	डबुआ कॉलोनी	डबुआ कॉलोनी	12 / 04 / 2016
लवकुमार / सीताराम	124 / 2016	एस.जी.एम. नगर सैक्टर–21डी	डी.टी.सी. फरीदाबाद	07 / 03 / 2016
मालती / माही चन्द	133 / 2016	रेखा टी.बी.एच.बी. एफ.आर.यू–1	सैक्टर–30	14 / 05 / 2016
दिनेश सुपुत्र रामबाबू	030 / 2016 Cat-II	एस.जी.एम. नगर सैक्टर–21डी	डी.टी.सी. फरीदाबाद	12 / 04 / 2016
मन्टोली सुपुत्र राजकुमार	042 / 2016	सविता टी.बी.एच.बी. हरि विहार	बल्लभगढ़	02 / 04 / 2016
विशाल सुपुत्र जवाहर सिंह	032 / 2016	इंदिरा कॉलोनी	सैक्टर–3 एफ.आर.यू–2	30 / 01 / 2016

नोट :– बाकी 1608 मौतों का ब्यौरा यहां छापना सम्भव नहीं है। पूरी सूची उचित समय पर संपादक की वेबसाईट www.tbfreeworld.org पर डाल दी जाएगी।

23 टी.बी. रोगी जिन्होने डॉट्स का सरकारी इलाज 5 बार लिया :

नाम	टी.बी. (यूनीक आई.डी.) नं.	पता	टी.बी. यूनिट
चन्द्रभान सुपुत्र सूरज भान	483/2006, 818/2006, 309/2011, 1167/2011, 655/2012	मेवला महाराजपुर, अनंगपुर	पल्ला
रामजीत पुत्र होरी लाल	951/2008, 258/2011, 1450/2011, 285/2014, पी.एम.डी.टी. नं. 141/15	ऊँचा गांव	बल्लबगढ़
दिल बहादुर पुत्र जंग बहादुर	220/2011, 937/2012, 1335/2012, 173/2015, 706/2015	ई.एस.आई. डिस्पैंसरी नं. 4	डी.टी.सी. फरीदाबाद
सपना /अजय	273/2011, 755/2012दिल्ली 541/2013फेल, 022/2014, 456/2014	सेहतपुर	पल्ला
सुभाष पुत्र राजन (राम स्वरूप)	1371/2011, 470/2012, 682/2013 (ई.एस.आई.डी–4), 74/2014, 002/2015	विजय पाल टी.बी.एच.वी.	बल्लबगढ़
प्रेमचन्द पुत्र पूरन	287/2011, 639/2013, 111/2014, 33/ 2015, पी.एम.डी.टी. नं. 408/2015	विजय पाल टी.बी.एच.वी.	बल्लबगढ़

नोट :– जगह की कमी के कारण बाकी 17 नाम यहां छापना संभव नहीं है।

5000 बद्किस्मत मरीज (फरीदाबाद):

23 रोगियों ने 5 बार, 107 ने 4 बार, 556 ने 3 बार सरकारी ईलाज (डॉट्स) लिया। 4300 अन्य रोगी सरकारी टी.बी. प्रोग्राम में दो–दो बार पंजीकृत हुए पाए गए।

1618 रोगियों की मृत्यु हुई।

सारी विस्तृत सूचियाँ तैयार है; उचित समय पर सम्पादक की वैबसाईट www.tbfreeworld.org पर डाल दी जाएगी।

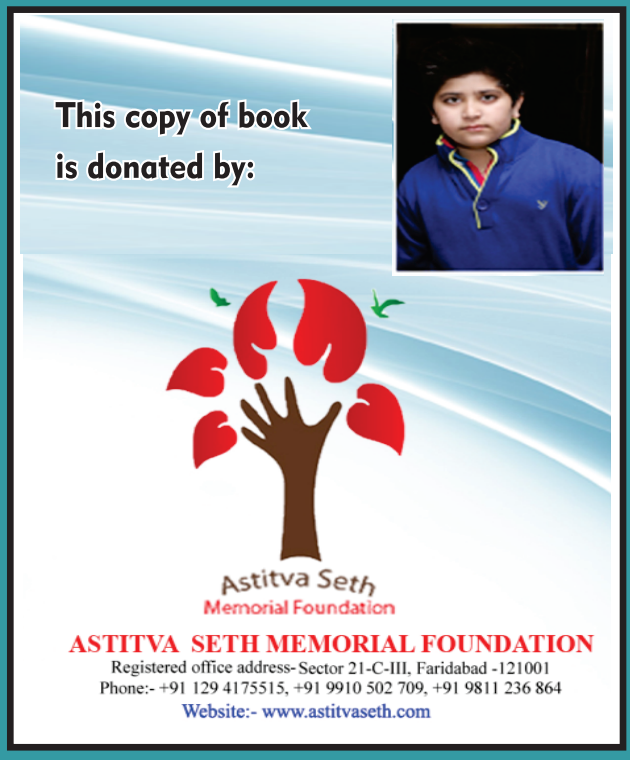

सम्पादक: डॉ. रमन कक्कड़